लीक से हटकर

समता पुस्तकमाला

हम सभी को इस बात का अहसास है कि बचपन से लेकर बुढ़ापे तक औरतों की जिन्दगी में ढ़ेरों मुश्किलें आती है। उन्हें हर मोड़ पर दबाया जाता है, रोका जाता है और अपने फैसले खुद करने से रोका जाता है। ऐसा क्यों है?

अगर हम गौर करें तो पाएँगे कि हमारी सामाजिक व्यवस्था पुरुष प्रधान या पितृसत्तात्मक है। इसका माने है पुरुष या पिता का परिवार पर राज या सत्ता। ऐसी व्यवस्था में पुरुष ही परिवार की सम्पत्ति पर नियंत्रण रखते हैं और खुद ही सब फैसले भी लेते हैं। इस ढ़ांचे के तहत औरतों का मर्दों से नीचा या कमतर माना जाता है यानि उन्हें दोयम दर्जा दिया जाता है। यहाँ ऐसी धारणाओं को मान्यता दी जाती है कि पुरुष स्त्री का स्वामी है, उसका मालिक है और इसके लिए भगवान स्वरूप है और स्त्री खुद अबला है जिसे अपना सारा जीवन किसी पुरुष के अधीन रह कर बिताना होगा चाहे वो पिता या पति हो या फिर बेटा ही। प्राकृतिक रूप से देखें तो स्त्री-पुरुष में अन्तर जरूर है परन्तु ऊँच-नीच का भेदभाव समाज का थोपा हुआ है। ऐसा नहीं है कि प्राकृतिक रूप से औरतें पुरुषों की अपेक्षा कमजोर होती हैं। औरतों के लिए परिस्थितियाँ इस बात से और बिगड़ती आई है क्योंकि गैर बराबरी की इस गलत सामाजिक मान्यता को न सिर्फ पुरुषो ने बल्कि स्त्रियों ने भी एक सच्चाई मान लिया है। हुआ ये है कि धर्मों की व्याख्या भी ज्यादातर पुरुषों ने ही की है और इसे एक वास्तविकता बताया है।

अब सोचिए कि यदि बचपन ही से लड़कियों को अपने भाई की अपेक्षा कमजोर होने का अहसास दिलाया जाएगा तो उसका आत्मविश्वास किस तरह विकसित होगा? जब भाई को पढ़ने जाते देखेंगी और खुद चुल्हा चौका देखेगी, जब भाई को दूध दिया जाएगा और वह मन मसोस कर रह जाएगी, जब भाई दोस्तों के साथ खेलने-घूमने जाएगा और उसे डाँट कर घर में बन्द कर दिया जाएगा - तो वो उस बहन पर क्या बीतेगी?

जब छोटे उम्र से ही बच्चियों का आत्मबल कुचल दिया जाता है तो आगे चलकर उनके लिए दिक्कत बढ़ती चली जाती है क्योंकि उन्हें सवाल उठाने की आदत नहीं पड़ती। हालात को बदलने के लिए आत्मबल जुटाना इतना आसान नहीं रहता। ऐसे माहौल में स्त्रियों के अपने सपने कहीं दब कर रह जाते हैं और उनका व्यक्तित्व जीवन भर नहीं निखर पाता।

तमाम दिक्कतों के बावजूद ऐसा नहीं है कि परिस्थितियाँ बदली नहीं जा सकती। इन पुस्तकमाला में कुछ ऐसी स्त्री पात्रों से आपका परिचय होगा जिन्होंने विकट परिस्थितियों में भी पितृसत्तात्मक व्यवस्था को ललकारा और लीक से हट कर अपनी एक राह तलाशी। शायद हमें भी इन से प्रेरणा ले सकते हैं और एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था के सपने को साकार करने की सोच सकते हैं जहाँ स्त्री-पुरुष के रिश्ते में परस्पर सम्मान व समानता का प्रयास हो।

भारत ज्ञान विज्ञान समिति

मूल्य: 10 रुपये

S - 3

मीराबाई

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

मीराबाई : कमला भसीन
Meerabaei : Kamla Bhasin

जनवाचन समता पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

© साभार : 'सबला' पत्रिका

पुस्तकमाला संपादक : विभा वोहरा
Series Editor : Vibha Vohra

रेखांकन: रविन्दर सिंह
लेजर ग्राफिक्स: अभय कुमार झा

प्रकाशन वर्ष: 1999, 2000, 2006

मूल्य: 10 रुपये
Price : 10 Rupees

Published by ***Bharat Gyan Vigyan Samithi***
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block
Saket , New Delhi - 110017
Phone : 011 - 26569943
Fax : 91 - 011 - 26569773
email: bgvs@vsnl.net

मीराबाई

एक ऐसी नदी जो बाँधी न जा सकी

मीराबाई को एक कृष्ण भक्त के रूप में तो शायद सभी ने जाना है। परन्तु यहाँ पर लेखिका कमला भसीन ने उनकी जीवन यात्रा को एक फ़रक नज़रिए से पेश किया है- मीराबाई ने अपनी जिन्दगी में हर कदम पर पुरुष प्रधान समाज के नारी विरोधी रीतिरिवाज़ों को चुनौती दी। उन्होंने इन शोषक बन्दिशों को तोड़ते हुए अपने लिए एक नई राह बनाई, जो उनके अपने मन के करीब थी। उस दौर और समाज की अन्यायपूर्ण व्यवस्था मीराबाई की लगन और विश्वास को न हिला पाई।

नारीवाद और नारीवादी बहुत बदनाम हैं। इसमें हैरान होने की भी कोई बात नहीं है, क्योंकि औरतों की आज़ादी की बात बहुत कम लोगों के गले उतरती है। औरत की आज़ादी की बात होती है तो लोगों को समाज, संस्कृति, धर्म, परिवार सबकी नींव हिलती सी लगती है। परिवार के मुखियाओं को अपना राज सिंहासन हाथ से जाता नज़र आता है।

कई बार जिस औरत को नारीवादी कहकर तोहमत लगाई जाती है, उस बेचारी ने नारीवाद का नाम भी नहीं सुना होता। एक औरत का कहना है कि जब भी वह पायदान बनने से इन्कार करती है उसे नारीवादी कहा जाता है। मेरा मानना है कि हम औरतों के अधिकारों की बात करने वालों को कोई भी नाम दे दें, वो बदनाम होंगे, क्योंकि लोगों को परेशानी है औरतों की आजादी से। औरतों की स्वायत्तता, उनका स्वराज रास नहीं आता। औरत जगमानी, पति, बेटा मानी की जगह मनमानी करे ये कम लोगों को अच्छा लगता है।

अक्सर नारीवादियों पर सबसे बड़ी तोहमत लगाई

जाती है कि नारीवाद एक विदेशी विचारधारा है, यह पश्चिमी देशों से लाई गई सोच है। नारीवाद में लोगों को 'फॉरन हैन्ड' (विदेश षड़यंत्र) दिखाई देता है और लोग 'स्वदेशी' की दुहाई देकर नारीवादी सोच को बुरा भला कहते हैं। मज़े की बात यह है कि नारीवाद को 'पाश्चात्य की देन' कहकर उसे बेकार बताने वाले अक्सर वे लोग होते हैं जो स्वयं पतलून-शर्ट पहने होते हैं, अंग्रेज़ी भाषा में बोलते हैं। वे कई विदेशी दार्शनिकों के भक्त होते हैं।

क्या मीरा नारीवादी नहीं थीं?

मेरा अपना मानना यह हे कि नारीवादी सोच कहीं बाहर से नहीं आई। मेरी नज़र में हर सदी में भारत में नारीवादी सोच की औरतें हुईं हैं- और उन्होंने किसी अमरीकी नारीवादी का न नाम सुना था, न किताब पढ़ी थी। अब मीराबाई को ही लें। मेरा मानना है कि आज से 480 बरस पहले राजस्थान जैसे मर्दाने, पितृसत्तात्मक इलाके में पैदा हुई मीराबाई अवश्य एक नारीवादी थी। मीरा ने नारीवाद का नाम भी नहीं सुना था। न कोई पर्चा पढ़ा था, न किसी मोर्चे में भाग लिया था, न किसी महिला समूह की सदस्य थी मीरा। वह तो एक नदी थी

जो सामाजिक बाँधों में बँधकर न रह सकी। औरतों पर लगाये गये बंधनों में जीने को तैयार न हुई मीरा और बह निकली अपने मन की करने को। मीरा ने अपना सब कुछ दांव पर लगा दिया। उस 13-14 बरस की मीरा का मन ही आजाद था, उसके अंदर से फूट रहे थे झरने आजादी के। पितृसत्ता के खिलाफ, औरतों पर लगाये गये बंधनों के खिलाफ अंदर से निकलने वाला लावा ही नारीवाद है। यह कोई ऊपर से थोपा पहनावा नहीं है।

जैसा राजस्थान में होता था और आज भी होता है- मीरा की छोटी सी उम्र में शादी तय कर दी गई। अच्छे घर की लड़कियों को भी पढ़ाने लिखाने, कोई हुनर सिखाने की बात थी कहां तब। राणा परिवार के राजकुमार से मीरा की शादी तय कर दी गई, लेकिन मीरा ने तो कृष्ण को अपना पति पहले से ही मान लिया था। वह कोई और शादी नहीं करना चाहती थी। कहते हैं- मीरा ने बहुत मना किया शादी करने से, पर कहाँ मानने वाला था परिवार एक बच्ची की ऐसी अनसुनी मांग। शादी हुई और 13-14 साल की मीरा अपनी हम उम्र दासी और सहेली ललिता और अपने जीवन साथी कृष्ण की मूर्ति लेकर ससुराल पहुँची। कैसी छटपटाती होंगी ये नन्हीं-

सी जानें जिनकी जबरदस्ती शादी कर दी जाती है, जिन्हें बिल्कुल अनजाने घरों में हमेशा के लिये भेज दिया जाता है, अंदाजा लगाना मुश्किल है।

खैर-हर असहाय, अस्वायत्त लड़की की तरह मीरा ससुराल पहुँची। वहाँ सासूजी ने देवी की पूजा करने को कहा तो आज़ाद मन की मीरा ने कहा वह कृष्ण की

भक्त है, किसी और की पूजा कैसे कर सकती है। पूरा ससुराल परेशान हो गया होगा उस दिन। राणाओं के घर में अपनी मर्ज़ी का मालिक एक और कहाँ से आ गया और वह भी घर की बहू।

घरवालों के दबाव की वजह से मीरा का शरीर ससुराल जरूर पहुँच गया था, पर उसका मन अपने पति

को नहीं स्वीकार सका। और लड़कियों की तरह मीरा अपने मन के खिलाफ कुछ करने को तैयार न थी।

एक परम्परा के खिलाफ मीरा का विरोध

कुछ बरसों के बाद मीरा के पति की मौत हो गई यानि छोटी सी उम्र की मीरा विधवा हो गई। वहाँ की रीति के हिसाब से मीरा को अपने पति की मौत के बाद न जीने की जरूरत थी न जीने का अधिकार। उसे सती होने को मज़बूर किया गया। अंदाजा लगायें क्या हालत रहीं होंगी मीरा की। 20–22 साल की मीरा एक तरफ़ और सारा समाज एक तरफ़। मीरा ने कहा कैसी सती ? क्यों सती ? मेरा पति कृष्ण है और उसका देहान्त नहीं हुआ है तो मैं भला कैसे विधवा हुई ? यह सोचकर भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि अगर मीरा अड़ी न होती तो वह ज़िन्दा जला दी जाती। वह हज़ारों गीत जो मीरा ने बनाये– न बनते, न गाये जाते, वह रास्ते जो मीरा ने बनाये, जिन से पाँच सौ बरस बाद भी हम जैसे लोग उत्साहित होते हैं, न बनते। राजस्थान की हज़ारों, लाखों बेटियों, बहुओं जिनको जिन्दा जला दिया जाता है, या जिनको पैदा होते ही मार दिया जाता है– उनमें से एक होती मीरा। न जाने कितनी मीराओं की बलि चढ़ाई गई

है पितृसत्ता पर। न जाने कितनी और मीरा जैसी ही होनहार बच्चियों को सोचने, लिखने, गाने से वंचित रखा है पितृसत्ता ने।

पितृसत्ता के खिलाफ मीरा की लड़ाई

अपने तरीके से मीरा ने विवाह जैसी संस्था का विरोध किया, बहुओं पर ससुराल की हर बात थोपे जाने का विरोध किया और भाग्यवश सफल हुई। मीरा की आस्था, उसका विश्वास इतना अटल रहा कि वह अपने रास्ते से नहीं हटी।

अगर गौर करें और देखें कि मीरा ऐसा क्या चाहती थी जो गलत था। वह सिर्फ़ अपनी मर्ज़ी से जीना चाहती थी- उसके अंदर जो लगन थी उसे पूरा करना चाहती थी। वह लगन थी परमात्मा के प्यार की, वह लगन थी आध्यात्म की। साधू संगत की लगन थी, परमात्मा के प्रेम में नाचने की लगन थी, कृष्ण की याद में गीत लिखने की लगन थी। मीरा यह मानने को तैयार नहीं थी कि चूंकि वह लड़की है- उसे यह सब करने का अधिकार नहीं है। यह लड़के लड़की का भेद, स्त्री-पुरुष की गैरबराबरी मीरा को कबूल नहीं थी। 15-16 साल की उम्र से ही मीरा ने इस अन्याय को चुनौती दी।

मीरा की लगन में इतनी चमक रही होगी कि उसके परिवार वाले उसे रोक न सके। मीरा ने साधुओं, ज्ञानियों के साथ उठना-बैठना शुरू किया। सुन्दर कपड़ों और गहनों की जगह मीरा को भक्ति से प्यार था। सुनारों से मिलने की जगह उसे साधुओं, फकीरों से मिलना अच्छा

लगता था। एक विधवा औरत पराये मर्दों से मिले यह भला राणाओं को कैसे अच्छा लगता। मीरा के ससुर, जेठ आदि ने कभी धमकी देकर मीरा को रोकने की कोशिश की, तो कभी बदनाम करके। लोग कह रहे थे 'पागल है यह औरत' सिरफिरी है, अपने इज़्ज़तदार परिवार का नाश कर रही है'। तब घूंघट और चारदीवारी

के अंधेरों में सिमटकर रहने वाली औरतें इज़्ज़तदार कहलाती थीं। खुला आसमान और रोशनी चाहने वाली औरत कुलनाशी मानी जाती थी। मीरा जानती थी यह सब और उसने कहा-

'पग घुंघरू बाँध मीरा नाची रे'। लोग कहें मीरा भई रे बावरी, सास कहे कुलनासी रे'-

उस औरत विरोधी समाज से मीरा को लाज नहीं थी। वह निकल पड़ी।

अंदाजा लगायें, पाँच सौ साल पहले के राजस्थान का, जहाँ पर्दे के बिना 'ऊँचे' घरों की औरतें बाहर नहीं निकलती थीं, वहाँ पर राणाओं के घर की विधवा बहू गलियों में घूमती, मर्दों के साथ उठती बैठती, कृष्ण प्रेम में मगन गाती, नाचती। आज भी मीरा जैसी औरत ढूंढना आसान न होगा जिसमें सामाजिक बंधन, रूढि तोड़ने की हिम्मत हो, जिसमें इतनी अन्दरूनी शक्ति हो कि वह हर रूकावट का हंसते हुए मुकाबला करे।

विष का प्याला राणाजी ने भेजा,
पीवत मीरा हांसी रे'
मीरा ने अपने ससुराल वालों से कहा-
'राणाजी अब न रहूँगी तोरे हठ की
साधू संग मोहे प्यारा लागे लाज गई घूंघट की'

राह के हर पत्थर को सीढ़ी बनाया

पितृसत्ता और सामन्ती राज को ऐसी चोट मारी मीरा ने कि आज तक भी उसकी रोशनी फैली है। अगर मीरा जैसी लगन, उस जैसी फ़कीरी, निडरता हो तो एक अकेली औरत पितृसत्ता के गढ़ में पैदा होकर भी उसपर धावा बोल सकती है। कितनी औरतों के दिलों को गर्माया होगा मीरा की हिम्मत ने। मीरा ने साबित कर दिया कि औरत भी भक्त हो सकती है, भक्ति में मस्त हो गीत बना सकती है, अपनी लगन और आस्था के दम पर ऐसी शोहरत पा सकती है कि अकबर बादशाह जैसे लोग उससे मिलना चाहें।

अपनी सहेली ललिता के साथ मीरा गाँव-गाँव, शहर-शहर डोली। कृष्ण के गीत गाती वह कृष्ण भक्तों की खोज में वृन्दावन पहुँच गई। बिना बस, रेलगाड़ी, घोड़ा गाड़ी के मीरा और ललिता चलती थीं सैकड़ों मील। रास्ते के गाँव और कस्बों के लोगों की जरूर मदद रही होगी उन्हें। राणा मीरा के दुश्मन ज़रूर हो गये थे पर आम जनता मीरा को चाहती होगी, उसकी हिम्मत की प्रशंसक होगी। वृन्दावन में मीरा कृष्ण के मंदिर गई तो वहाँ के मुख्य पुजारी ने मीरा से मिलने से इन्कार कर दिया। कहा कि वे औरतों से नहीं मिलते।

कृष्ण की सच्ची भक्त मीरा ने कहलवाया कि 'कृष्ण के होते एक और मर्द कहां से आ गया। मैंने तो सुना था कि कृष्ण के सब भक्त गोपियों या स्त्री समान होते हैं।' इस पर मीरा ने एक पद भी रचा।

'हूँ तो जाणती हती के ब्रजमां पुरुष छे एक
ब्रजमां वसी के तमे पुरुष छो,
भलो तमारो विवेक'

कहते हैं यह सुनकर वे मर्दाने पंडित जी शर्माये और मीरा को मिलने चले आये। इस प्रकार मीरा ने स्त्री-विरोधी धर्म के ठेकेदारों को भी आड़े हाथों लिया। अपने निराले ढंग से मीरा ने जगह-जगह पितृसत्तात्मक सोच को ललकारा, उसका विरोध किया।

क्या कबीर, रहीम, गौतम के रास्तों पर इतने सामाजिक कांटे थे?

हर कदम पर मीरा को पितृसत्ता का मुकाबला करना पड़ा। कबीर, रहीम या गौतम के सामने ऐसी रुकावटें नहीं थीं। उन्हें किसी ने ज़हर के प्याले नहीं भेजे, न किसी ने कुलनाशी कहा। उन्हें हर क़दम पर इतने इम्तहान (परीक्षायें) नहीं देने पड़े जितने औरत होने की वजह से मीरा ने दिए। गौतम जब सत्य या बोध की खोज में

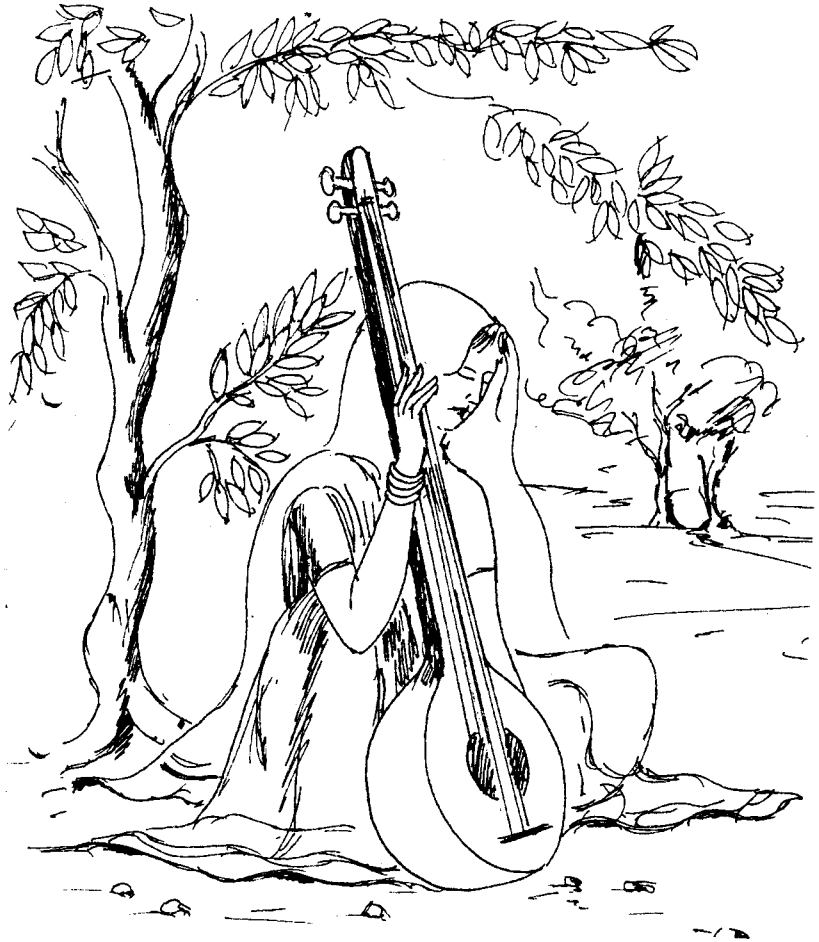

अपनी पत्नी, बेटे, माँ-बाप, राज-पाट छोड़कर, बिना बताये निकल गये तो सबने शोक ज़रूर मनाया पर उसके पीछे फ़ौजें नहीं भेजीं, उसे मारने के षड़यंत्र नहीं रचे गये। इन सब पुरुषों को, जो ज्ञानी, ध्यानी, फ़कीर, कवि, लेखक बन जाते हैं उन्हें मर्द होने के जो अनगिनत फ़ायदे मिलते हैं वो मीरा को नहीं मिले। इसीलिये

कहते हैं कि औरतों को मर्दों की बराबरी करने के लिए उनसे दुगनी सहूलियतें चाहिए।

हालाँकि मीरा की मृत्यु के बारे में कुछ पक्का नहीं है, पर एक मान्यता यह है कि आखिरी दम तक मीरा के ससुराल वालों ने उसे चैन से जीने नहीं दिया। मीरा और ललिता समुद्र के किनारे बसे तीर्थ द्वारका में थी। राणा ने पांच-सात ब्राह्मन भेजे मीरा को वापिस लिवा लाने को। मीरा के इन्कार करने पर ब्राह्मणों ने कहा कि अगर मीरा उनके साथ वापिस नहीं जायेगी तो वे अनशन कर देंगे और अपनी जान दे देंगे। इतना मानसिक दबाव मीरा सह न सकी। कहते हैं उन्हीं दिनों में मीरा और उसकी जीवन-मरण की साथी ललिता समुद्र में समा गई और हमेशा के लिये ससुराल वालों की पकड़ से दूर चली गईं। कहने को लोग कहते हैं कि मीरा को समुद्र में कृष्ण दिखाई दिये और वह उनकी तरफ़ चल दी और समुद्र में समा गई, पर यह भी मुमकिन है कि मीरा ससुराल के दबाव का और मुकाबला न कर सकीं, वह थक गई थीं विपत्तियों का सामना करते करते। उसे हर वक्त सामाजिक लहरों के विपरीत चलना पड़ा था। शायद अंत में मीरा जैसी औरत को भी पितृसत्तात्मक रीति-रिवाजों के बोझ ने मार डाला। मरकर मीरा अमर

हो गई और हमें यह संदेश दे गई कि मुश्किल से मुश्किल हालातों में भी नये रास्ते बनाये जा सकते हैं, गहरे से गहरे अंधेरे में भी दीप जलाये जा सकते हैं।

❐❐❐❐